TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4449**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

१

ए जण॥ श्रीसोमसुंदरसूरिगुरुभ्यो नमः॥ ॥पणमवि पढम जिणंद आदि। नमि पास आराही। समरीइ आसनादे विवि
मरसमतिअ बाई। सगी सेवक दिउ मात। स्वामी बुद्धि विशाल। अर्बुद सिहर तणुं अ तवन। जिम रचउं रसाल॥१॥ गढमढ
मंदिर पोलि पगार। ईणइं अर्बुदि सुणीइ। दस गाऊ ऊंचउं सिषर। गिरराय ऊ धुणीइ। वावी कूप आराम गाम।
द्रवहं अग जिय। विमाउलि याति विमल साहि। दलीती णसंईऊीय॥२॥ निर्मल चित्तिहिं विमल मंत्रि। अठमतप की
धउ। साद सलगइ सुप्रसन्न थई। अंबिका वरदी धउ। अ[ ]र्बुद सिहिरि सोहामणी। जिनवसही करावउं संपन्न
वि विन्न वावरी। जसमम दीय लिराद वउ॥३॥ संघस[ ]हित [ ] अर्बुदि चडी। ऊव सूरतली धउं। पतीयाणि नर
डमिलीत व घोरंदी धउं। जिन शासन कदी[ ]इन[ ]तीइ[ ]ण अर्बुदि आगइ। मंत्रीश्वर चिंता करी। तव
निसि दिन जागइ॥४॥ गढ गिरिनार हस्वामिनी। त[ ]वप[ ]त्य कूबालइ। मागि सोना गिइत सूसमुद गमा
दिन दीनालक्ष। नागेंद्र वंद्र निष्ट निस्तरि विद्याधर मता[ ]धर। नरहसु वा पिउंती [ ] सारदद उ आणंद रसि॥५॥ इ
त्रसिला आसन्न प्रियंगु। वारू ऊपत सोहइ। जिम णइ स्वयक सफल सदा परमलऊ गमा हइ। इणि अहिना
णि इंमं त्रिराज ती र्थ प्रभरउ। तद नत सूरति आदिनाणी मनरंगि सुहार उ॥६॥ हरि हिइ निरषी जाइ जामं किसु रव
प्रमड्लाधउ। न्याउ पार्जित वित्त वरि। निज काज जसा धउ। दान दई घोडइ चडी। जेव तीर्थ आवइ। आदिजिन बि
का क्षेत्रपाल दीषी हर्षिव धावइ॥७॥ वस्तु। [ ] मंत्रि हरषि इरउलूसी अरोमच। कंचन कपड सोवटू चीस्व गमा

गतंआपइंइवठंडखिरुरमधरंतेबोलइउत्तमाहमाइधायरुमीयममावीयइमसरणइंकरंडुनवसहीविद्या
ला।धायनआखिलआखिका।मानखिकरइक्षिआलउ॥८॥ साषा॥ विमलमंत्रीस्वरितडीयाएओसीअति
हिसुआगउ॥विनयवडमानेपूठीआपा।मफुरतकरितेप्रमाणउ॥९॥विज्ञानीबुद्धिआगलाए।सिद्धावद
मपांवउरंमानदईयक्षिरावीयाए।कमठाकरनप्रपंचउ॥१०॥ आणंदिइंआरासणतणीआ।वांहइंरवाणिआ
मंत्रउरहिकलिजूनाकुलिसिस्वरइ।खरीनूतसइए वउ॥११॥अलविकुबरसा।तणीअपाऊइ।वडइंवड
इंउमृताणिउ॥रुयमंगलीयाइमतणइए।उष्ठ ताअ धिकसाताणउ॥१२॥ यायरियडइएकरवडरव
डइंए।एकतेताजीअयडंतिउ।कवटिकव इडो वड इए।तष्ठदेविसानखिकरंतिउ॥१३॥देउल
वाडइविवधवास्।कनाराअतिचंगउ।सादपड इक डाक्षिकनरइए।सोजनिनतनवांरंगउ॥१४॥घा
टघडइआसीसदिइं।मंत्रीश्वररूयवंतउ।उद्दाल ारासणतणुए।रूपामसंडंतिउ॥१५॥मीणजिम।
कारणीकोरीइए।वारूसारूआरघाटउ।नडपरीपीठबंधीइए।जाणेकाश्मीराषाट॥१६॥सुनमकूरतिघणउ
विहिं।मंडिआगऊधरसारउ।ततकूणिघरकुंपितए।रूनकहिकोपआपारउ।मंत्रीस्वरियरुपूठीयाए।बलि
बाकुलकीजइ।लोगउछ्णिपरिमंडिअसातवार।हिवकीजइनपथामउ॥१७॥अठमतपनिद्धाणीतए।करी
मरीनेवकारउ।नमनायकतपतिनिकरी।वरतिजूयझकारउ॥१८॥ वस्तु॥ मंत्रिमंत्रीयरघरणिसुंउन्न 1

संपन्नाप्रासादगामि।नागयागबलिबाकुलकीजइशांतिकपुष्टिकविधिकरी।घरदधायिनियथायवंयइ।इणि
परिकमताचालितं।ादघीघीजिनवीर।अवसरिफलआमृदाधिस्।जयउथ्रीदासिजतीरश॥१९॥ नाषा॥ हिवप्रत्यक्ष
घईअंबाविदवि।बालइवरवयण।फवारूऊधतलदवीर।कपाडीनयणं।नमनजाणिसिएवांणीनपसबलविम
लमदंता।इणिवसिआण्याबावनवीर।नितसेवकरंता।नूतप्रनसविंदमीयाजाइणिमाइणितअ।प्रबलप्रपंच
यंतरास्निरमालडीयमानइआरासवइ॥२०॥इणिरणि। जीताछत्रपटेकमृडमाडंता।आसपतिगजपतिकर
इंसवबकरजाडंता।माटादीदूराणायरायंजविबद वद तेसविजीता।विमलसाहिसुरादत्यवदीता।मही
अलिमहिमापहृतणुकहितनकहिपुजाइ।घ तल मुड संपिमी।निणलागइअबिकायाय॥२१॥ इविहि
मनदिइअंबाविमातस्रणिरहाघतलह।दिवरावम ऊ लागलोगवलीअभिकराबाकुल।विमलदिइरंषि
इंकणयरकादिआणीवरमाल।तलिइसीवीसिंदूरस् रिदीधाअतिबाकुल।आणंदिइंआकासिवडीवरस
२ इवयणरमाल।विरनंदनपादिनलादिव।निणजयुरकाडिदीवालि॥२२॥गजघरनरपवअश्वघरअनुक्रमिवडता
क्रिकुकनलीवडकयवालकंबरवइसंता।घाटघडंतापडइसादरषकोआलसकरंता।पनआद्दनिनादसादिघण
नअवकरंता।इणिपरिपदमसिलावडीसिलाघटदीजइदानविहवीटीछावमोकली।निंवलीआयइयान॥२३॥
आरवामंडपमंमपरंगअवइवनाणामंडपा।नवचकीइआलीयाविआलजाणइंद्रमंडप।पाटसिरांकुंतीअधांनका 2

राणी अनोपम। वावनद हरीत पुण्य माल कांण कहीइ नंयम। देहरी आगलि दीपतां बिउ की विसरी ओणि। मन मांहि
इणि कारणि। नि० अपतिनपाम कंनयणि ॥२४ महमेड पिमे डिआदिदादनतु हारु। जिमण इतुद गिआबादि दविप
णामी अनिहालु आगलि रूतु रूतपाल रूकांकरतु। गलि रेडमाला करितुरु गमरू अवाययं। पाटी सनि रितणी
समासरणि विवालिय डिमाबहू दरसिणतणी। निरूरीय महद निहालि ॥२५ गऊद लिरू चुविमलसाहक रिधरी
अतिवासण। वणिइ आणु बिंबआदघरिघापिआसण। दे... मविद सीमी मालसयबहू मल्हान रिदद। तरू दिसिक
रासंघलो कंआ वइआ निरदह। धर्मघोषसूरि गण धरी ... याक ... इरप्रतिष्ठारु मविमल मंत्री अरकलटिइ। नि० राय
इरू अडारंग ॥२६ संघ वात्सल्य मांडइ पाटआटआ ... णाअ ... क्वा ... ली। फलरू लिकलो यकवान द्रायवली साकरवा
ली। खारखांड मांडा घीसवल्लायसी सदा लंप। कूरदा ... लि ... न ... वडावली जीनांरली। कयर कयरी फाडी चीनडा
टीमरूगवम कार। कपूर वास्या करंबा नला। नि० पान बीडां ... अनिवार ॥२७ पहिलुं सुरू युरू संघ पूजं दर सिणहवि
हिरावइ। पनइ संघपंचां गम डिमाव टूअ पहिरावइ। मावल नाणां नालिकेर भूगयामतंबोल। याचक वीरक बाहिआ
अकीजइ रंगरोल। संवत् दस दाहोतर इंरीरी प्रतिमा आदि। मानदाघतेसपरिगरी। नि० विमलवसही अवांदि ॥२८
आघाम नपिघोइ अनपूगीफल पकवांन। घात्रमहाअवूकरइ रंगिनृत्य उकीइ प्रधान। तुं गलनेरी मृदंगताल दड
दडी असुवर्ण शि। खेलाखेली खेल इंश सरंग मनपिन तुइ। वउविहसंघ मिली अदिइं महाधउ आरती वंग। आवय
आवीय मिली असवि। नि० चेत्रप्रवाडि सुरंग ॥२९ पंचकाइ इविंबसंखपकमह सामतिताल। समवसरणादी पंति
आरिहंड कलसकुलामल। महमनयपो सालमालंतउकी अतुसाल। नितदीऊ इदीवलफ लंजिमगामहऋषि
पालदा। विहिष श्रीमाता अर्बुदां अस लेअरआघाट। विमल मंत्री अरियसिकरी। नि० पलइ सदाप्रणवाट ॥३० वस्तुअ
प्रकृविप्रगटीयश पदप्रासाद। आबूकूपरि आरतुं विमल साहिवसही अकारिय। बहु अकोडि वित्रवाकरी अवदवा
टजीणिइं वहाविअ। धंमधुरिंधर जगि तिलुविमल ड... हन रिंह। मदिअलिनियनामर हाविउ जांऊ गइरविचंद
॥३१ नाषान। क्षिव कीरूइ इएवत्र घवाडिलू णि... गवा... हीन मिजिणाई यष्याश। वस्ति गिइं पमाइ परांध अ
बुदिनेटी आदि जिणआईयाश। वसही पदीवी ... जाम ... क्विम ... यरू उमनिघण उपआ०२। धनधनूएजीवीयध
संसफलजंवारू नीह तणुपअ०२ ॥३२ दषइं पअ ... गटा। ... सहू लोक लोहडी उनविलेई सकइं एअ०२। माबा
लई एश्री वस्तुपाल ईणपरि निजवित्तवावरइ एअ०२। ... तेतरइं एतकरी सार। युगतिरम णी लीला वरइं गअ०२
। बिवजि मीइ पहु बीजी वार। जिण ठवणा वारु करइए अ०२ ॥३३ असिय दण तेजुवस्तुपाल। आविअअ बुदिमा
इसहितअ०२। मंडी आण पनीयाणा लोय। बोलावी दीइं मानमहू तअ०२। आगुण वारू गम। नामरहावु विमल
जेमअ०२। वातेनणइं एश्री वस्तुपाल। तुं इं महीयां तो वडइं कीमअ०२ ॥३४। वस्तिगिइंपवउकडांनी रिहिवआगु
फदीयावडइंगअ०२। ... गउपल मं त्रिराजा सउंफदी कीयो वडइएअ०२। मंत्री अरइंपणो वडांप्रगिउं लईमह

रलकरिउं पंअ॰ २॥ अवीयाण सिलावट मजूर। पीठ बंधी नइ सिउ सरिउं पंअ॰ २॥ ३५ नीपजइ एम सारू आरघाट। पाट
कुसीधां सोमिरं पंअ॰ २। कोरणी पवित्र विचित्र। पूतली नाटारंभ करइ पंअ॰ २। नीपनु एपूरउ प्रासाद। नव नव कोउ।
सासा धरइं पंअ॰ २। पालिं इंगा नालि बिचाल। गऊखा लाख विंइं करइं पंअ॰ २॥ ३६ पहिलइ एगजि आसराज।
बीजइ कुंअरि मा वडी पंअ॰ २। अनुक्रमि इंग सकूअकूटब। न्हाई बहिन सात इवडी पंअ॰ २। वस्तिगिइंग
नइ तजपाल। कीरति मंगल कुतुकरी पंअ॰ २। इणि [illegible] परिप श्री वस्तुपालि। धर्मवल्ली नाम नरी पंअ॰ २॥ ३७ दद
रीप फिरती उलि। बावन जिणालु करी पंअ॰ २। [illegible] वस्ति [illegible] गिइंग अर्बुद सिहिरि बहू अकोडि विनमावरी पंअ॰
२॥ टंकाप बावन्न कोडि। त्रिपन्न लाष तअधिक [illegible] पण [illegible] अ॰ [illegible] २। इण परिप श्री वस्तुपालि। मूलनायक थापी नमि
जिण अ॰ २॥ ३८ वस्तुध॥ पुण्यपाल कप्युगटपा [illegible] रूअ [illegible] ड। आसराज कुलिमंडण। वस्तुपाल सुगुणीइ नरा
नमा माथ परा भ्रिइं निधि ठवि। अर्बुद सिद्ध सिदी सम [illegible] अनोपम। संवत बार पंच्यासीइ। लूणिग वसही कुथार
। सातसइ बिंब पकत्रीस सु। थापीय नमि कुमार २॥ ३९ नयरद्धि ह्नीयर वडउ सुरताण। तासु तणु व्यापारीउ। जीमू ३
सा दपु कुविधि निरमम। जिणि सुरठ दसत पुंबाद। बलकरी वाडवीयतिम। यत्रा यामी बिरुद लही। वंदगाडहुंत
नाम। अर्बुद गिरि आघाटरी मचु वारू वसही ठाम॥ ४० नीणिव सहीय २ सकल श्री आदि। पीतलमय प्रतिमा दीपती वी
मासुम णकारीय। तप्रतिमा श्री कुं न कलि। पनरबडोत्तर इ कूनारिय। कुंमलमेरि कराविआ। वनमुख गिरुअ

प्रासाद। थापी प्रतिमा संघ मिलि। पजन प्रणम्य युगादि॥ ४१॥ दस मो हइ २ थवर यउरात। पूरयाति अवदरीउ॥
चउरन रसा णम कप सुगुणीइ। विनय विवेक विचारघण। मुंड सुत गदराज सुगुणीइ। सीतुरबार हट आबूतण। मे
लिउ सीरोही संघ। विनय करी बिंब मागीजुं। आयु सदा धडं सघि॥ ४२ हर्ष कुलटिश थर आणंद। कं वणकं तिहिं ष्वि
पितलदा सय रिगरुं तीणं बिंबकारिय। जीमसा हव सहीअ तिहिं। बिंबु धार गदराजे सारिअ। संवत पनर बवीस
हि। श्री लक्ष्मीसागर सूरि। सुधानंद नसोम जय पुरि। प्रति [illegible] पद कारीन्हूरि॥ ४३ आबू अकय रिश्वत भरकप्रा
साद। खरतरयखि साहा मपा। साह मंडलिक कारि [illegible] य [illegible] रिइ प्रतिमा दीपती। जगमग तिआनरणी सा
रिश्च। पास जिणेसर नेटीइ। धरणेंद्र फणिधरी [illegible] वन [illegible] बि [illegible] सुधिक तिहां नमी॥ निर्मल कीधडं गात्र २
॥ ४४ चउ विवनयु खिश्वीं कुं विकुं दि सिइं। पूरबदि [illegible] सिइ [illegible] तबगली। तेय मणा व सहीअ दीसइ। तीणइं
प्रतिमा अतिघणी। नग्न रूप कन्ही अ दीसइ। कुबडहा [illegible] ति कराविउ। दिगंबर प्रासाद। तेजोइ विस्मय
हुउ। सुरठ गुजइ वाद॥ ४५ नमि जिण वर रतणु प्रासाद। तरी हासरिदी [illegible] इदीपउ। आबू तणइं संघ हिंका
रियां दंड कलश धज लहलहइं। इंद्र विमान सा प्रासाद सारीयां देव कुअवितिहां प्रणमीइ प्रतिमा पनरसं नमि सव
समुद्र लीलावरी। सिद्धि वधू वरु कामि॥ ४६ अचलई अरश्तणइ अहिठाणि। गय विहार इति दीपउ। कुमर
पालनरनर सिकारीय। करी यप्रमिण जम्न विहि। पीतलमय श्री आदि ठावीय। पाल्हण प्रमाण बिंब तिमा हरी। का। 4

री अमंद विसेष पय इअ त्रावयाल्त्रूणसूरि हिं। पासहि जिणफोद इक इ॥४४॥ आबू अ सिहिरि हिंडम ल महं इंवार। बार
पाऊसाह्यमणी। रातिमधपुरसीइं हकीधी॥ श्री मातावल हि अर्बुदा। विमल हउ बिनी णगं बुद्धि दीधी॥ अचले अरमदा गिली
। यो ह्वगाया धनदूरि। अबुद्धि पनो जाइ इं वनसपती घणा हूरि॥४६॥ मतुं ऊसम वडि इ आबू अवतार। जिन आस
निसमहिम घणा। अनुक्र विघ्रसिद्ध देवि हिं सुणीइं। विमलवसही आदि जिणा। धर्मसिव ऊं पितामह जणीइ। अ
नुक्रमा दिनमिया सजिणा। वेबितदाय कदेव। संवेगशिव [illegible] सुरव वांब सु। निउशक्र र तेउह सेवा॥४७॥ नीरव वंद
णुंरत्त थियसंघलोया। ओअल निधि मरु गिरि। दुय [illegible] निश्र [illegible] लसुकृत विजणीइ। रविचंदा तारगह यहली
धितांह सुणीइ। संवत पनर रवि विमहि दीपात्सवि [illegible] पकी [illegible] धर [illegible] गंत सुणंतां यात्र फल। अष्टापद फल की
धा॥४८॥ जितपा गछि गणधर। श्री सोमसुंदरसूरि राय [illegible] यस [illegible] सुकृ मिंइं सुणंत सुपाटि बइठा। गुरुडुइ
दीठा। श्री लक्ष्मी सागर सोमदेव नमुं। तसु बल इ वेजरा [illegible] श्री गुरु पट्ट। श्री सुधानंदन सोमजय पणुं। भव
आयशाया जिनं सयाया। श्री सुमति सुंदर गुरु सुघणुं॥५०॥ इ अचिय परिवारीय। आबू अ चली याक चिरई अति
हिमनि विगुं। मरुमंडलि इसइ आबू अगिरी सइ तीरघराय सुगा दिजिणुं॥ त्रिभुवन राया आदि जिणराया
सेवउ अहि निसि नरवि [illegible] जणुं॥ तसु नव नव सींसपश। श्री सोमदेव कं पश। नणतां फल कुड इ आत्रतणुं ३॥५२॥ इति श्री
अर्बुदाचलस्तवपरिपाटी समाप्ता॥ संवत् १५४१ वर्षे माह मास समाप्ता [illegible] ग्राम सुंदर संवगगणिना लिखितं॥